

धार्मिक सहिष्णुता एवं नैतिक दर्शन

Mr. MD Rizwan Ansari

सारांश ;

यह शोध पत्र भारतीय दर्शन एवं धार्मिक सहिष्णुता के सामाजिक धार्मिक तथा नैतिक आदर्शों को विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। भारतीय इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि सम्राट अशोक जैसा शक्तिशाली सम्राट अपनी विशाल सेना के बल पर नहीं अपितु धम्म की नीति अर्थात् धार्मिक सहिष्णुता की नीति को अपनाकर 'महान' की उपाधि से विभूषित हुआ। इसी प्रकार मध्यकाल में सम्राट अकबर ने सुलह-ए-कुल एवं धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाकर स्वयं को 'महान' सिद्ध किया तथा आधुनिक भारत में महात्मा गांधी ने सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत को अंगीकार कर एक साधारण व्यक्ति से 'महात्मा' का पद प्राप्त किया। प्रस्तुत अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि धार्मिक सहिष्णुता की नीति जब मात्र सिद्धांत तक सीमित न रहकर व्यवहार में भी उतरती है तभी एक राजा सम्राट अशोक अकबर के रूप में तथा एक साधारण आत्मा महात्मा गांधी के रूप में रूपांतरित होती है। भारतीय दर्शन का यह आदर्श सदैव सार्वभौमिक सत्य रहा है।

मूल शब्द धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक आदर्श, सर्वधर्म समभाव, सहनशीलता एवं अहिंसा, धम्म की नीति, सुलह-ए-कुल, सम्राट अशोक, सम्राट अकबर, महात्मा गांधी, सामाजिक राजनीतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण।

प्रस्तावना

भारतीय दार्शनिक परंपरा मूलतः 'स्वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'सर्वधर्म समभाव' एवं 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' के आदर्शों से गहनता से प्रभावित रही है। इन्हीं आदर्शों से प्रेरित होकर भारतीय धर्मदर्शन में धार्मिक सहिष्णुता की अवधारणा प्रतिष्ठापित हुई है। सामान्यतः यह कहा जाता है कि जब भिन्न-भिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों को मानने वाले लोग परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं तथा एक-दूसरे के विभिन्न विचारों, धार्मिक सिद्धांतों एवं कर्मकाण्डों के महत्व को स्वीकार करते हुए पारस्परिक निंदा अथवा शत्रुता का भाव नहीं रखते तो उनके इस उदार एवं सामंजस्यपूर्ण व्यवहार को ही 'धार्मिक सहिष्णुता' की संज्ञा दी जाती है।

धार्मिक सहिष्णुता की अनिवार्य शर्तें

अध्व धार्मिक सहिष्णुता की प्रवृत्ति उस समाज में उत्पन्न नहीं हो सकती जहाँ विभिन्न धर्मों अथवा सम्प्रदायों के मध्य समता का अभाव हो। स्वतंत्र विचार, धर्म एवं सम्प्रदाय रखने वाले समाज के सहिष्णु होने की सम्भावना इस बात पर निर्भर करती है कि क्या वहाँ के नागरिकों के धार्मिक विश्वासों का सम्मान किया जाता है, चाहे वे विश्वास बहुसंख्यक वर्ग के हों अथवा अल्पसंख्यक वर्ग के।

बढ़ यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि किसी व्यक्ति अथवा शासक को 'सहिष्णु' कब माना जाए। इसका उत्तर यह है कि मनुष्य को तभी सहिष्णु कहा जा सकता है जब पर्याप्त शक्ति-सामर्थ्य होते हुए भी वह किसी विरोधी विचार अथवा सिद्धांत को सहन करता हो। दूसरे शब्दों में, जिसके पास दण्ड देने की शक्ति ही नहीं है, यदि वह सहिष्णुता की बात करता है तो वह निरर्थक है। सहिष्णुता तभी सार्थक होती है जब सामर्थ्यवान व्यक्ति स्वेच्छा से अपने से भिन्न एवं विरोधी विचारों को सहन करता है, न कि विवशतावश।

2

इसका प्रमाण आज भी अशोक के शिलालेखों से प्राप्त होता है। प्रथम शिलालेख में पशुबलि की निंदा की गई है। तेरहवें शिलालेख में धार्मिक सहिष्णुता के लिए आत्मसंयम की शिक्षा दी गई है तथा बारहवें शिलालेख में धम्म नीति का उल्लेख मिलता है जिसमें धार्मिक सहिष्णुता के तत्व अनिवार्यतः निहित हैं। अशोक की इसी समग्र धार्मिक समता की नीति ने ही उन्हें सम्राट अशोक महान, जो वां जीम लतमंजद्ध की उपाधि से विभूषित किया। अशोक की धार्मिक सहिष्णुता की नीति पर जैन एवं बौद्ध धर्म के पंच महाव्रतों कृ सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का गहरा प्रभाव पड़ा। बारहवें शिलालेख में अशोक ने घोषणा की है कि हमारे साम्राज्य में सभी सम्प्रदायों एवं धर्मों के लोग एक साथ शांतिपूर्वक निवास करते हैं क्योंकि मैंने सभी को आत्मसंयम एवं मन की शुद्धि की दिशा में निरंतर प्रगति करने का आह्वान किया है।

अपने वार्षिक श्रमोत्सव के दौरान सम्राट अशोक एक ओर बौद्ध भिक्षुओं को दान देते थे तो दूसरी ओर ब्राह्मणों, आजीविकों तथा जैन मुनियों को भी समान रूप से दान एवं राजकीय संरक्षण प्रदान करते थे। अशोक की इसी धार्मिक सहिष्णुता की नीति को धम्म की नीति के नाम से जाना जाता है। इसके प्रचारप्रसार हेतु पाँचवें शिलालेख के अंतर्गत सम्राट अशोक ने धर्म महामात्र नामक विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की जिनका कार्य किसी एक विशेष धर्म का प्रचार करना नहीं अपितु तत्कालीन सभी धर्मों के मूल्यों कृ सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, विनम्रता एवं आत्मसंयम को बढ़ावा देना तथा सामाजिक समरसता स्थापित करना था।

सम्राट अकबर, मध्यकाल



चित्र 2^{रू} सम्राट अकबर इबादतखाना में विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ संवाद करते हुए, मुगल लघुचित्र। मध्यकाल में दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगल सल्तनत तक अनेक शासक हुए परन्तु उनमें से अधिकांश की धार्मिक नीति ने भारतीय समाज में साम्प्रदायिक विभेद को ही जन्म दिया, चाहे वह विभेद प्रत्यक्ष रूप में रहा

हो अथवा अप्रत्यक्ष रूप में। तथापि मध्यकाल में ही कुछ ऐसे शासक भी हुए जिन्होंने भारतीय सामाजिक-धार्मिक संरचना को गहराई से समझा और उसे आत्मसात किया। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण सम्राट अकबर की सामाजिक-धार्मिक नीति है जिससे उसकी 'सुलह-ए-कुल' की नीति के नाम से भी जाना जाता है।

अकबर ने सम्राट बनने के पश्चात सामाजिक एवं धार्मिक संदर्भ में सुलह-ए-कुल की नीति को अंगीकार किया जिसके अंतर्गत उसने निम्नलिखित सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा कृ

;पद्ध इबादतखाना की स्थापना कृ इसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधि स्वतंत्रतापूर्वक एवं निर्भीकतापूर्वक अपने-अपने धर्मों की रस्मों तथा दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत करते थे।

;पद्ध तीर्थयात्रा-कर की समाप्ति कृ अकबर ने हिन्दुओं पर तीर्थयात्रा के दौरान लगाए जाने वाले कर को समाप्त कर धार्मिक सौहार्द की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की।

;पद्ध जज़िया कर की समाप्ति कृ अकबर ने गैर-मुस्लिमों से वसूले जाने वाले भेदभावपूर्ण जज़िया कर को समाप्त कर दिया।

;पद्ध दीन-ए-इलाही की नीति कृ यह एक ऐसा पंथ था जो समस्त धर्मों के उच्च आदर्शों एवं मूल्यों को समाहित करते हुए एक सर्वसंग्राहक व्यवस्था के रूप में गठित किया गया जो अकबर की धार्मिक सहिष्णुता का प्रत्यक्ष परिणाम था।

;पद्ध वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा सामाजिक समरसता कृ अकबर ने हिन्दू राजघरानों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर सामाजिक सद्भाव एवं आपसी प्रेम को बढ़ावा दिया तथा सर्वधर्म-सम्मान के मार्ग पर चलने का उदाहरण प्रस्तुत किया।

उपरोक्त उदाहरणों एवं नीतियों से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकाल में व्याप्त साम्प्रदायिक उथल-पुथल के मध्य भी अकबर ने सहिष्णुता तथा सामाजिक-धार्मिक समरसता के कमल-पुष्प को खिलाने का अवसर दिया और इसी नीति के कारण अकबर 'सम्राट अकबर महान' की उपाधि से सुशोभित हुआ।

महात्मा गांधी ;आधुनिक काल



चित्र ३०० महात्मा गांधी कृ सत्य एवं अहिंसा एवं सर्वधर्म समभाव के प्रतीक।

ब्रिटिश शासनकाल में जहाँ अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाकर भारत के विभिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य साम्प्रदायिकता का बीज बोया तथा विभिन्न जातियों के मध्य उच्च एवं निम्न वर्ग के भेद को हवा दी वहीं महात्मा गांधी के हृदयस्पर्शी दर्शन ने भारत को एक समान संस्कृति के सूत्र में पिरोकर भारतीय एकता एवं अखंडता को संरक्षित करने का सफल प्रयास किया।

महात्मा गांधी ने अपने दर्शन का मूल आधार गीता, भागवद्गीता एवं उपनिषदों को बनाया। इसके अतिरिक्त जैन धर्म से सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांतों को भी आत्मसात किया। गांधी जी ने धार्मिक सहिष्णुता से एक कदम आगे बढ़कर सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत को स्वीकार किया जिसका अर्थ है कि व्यक्ति को अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों के प्रति मात्र तटस्थ रहकर सह-अस्तित्व स्वीकार नहीं करना चाहिए बल्कि अन्य धर्मों की क्रियाओं एवं मान्यताओं में भी सहभागी बनकर उनके आदर्शों को स्वयं में समाहित करते हुए उच्चतर सत्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

महात्मा गांधी का धार्मिक सद्भाव-सम्बन्धी दृष्टिकोण मुख्यतः दो सिद्धांतों में परिलक्षित होता है। प्रथम गांधी जी ने सत्य को ही ईश्वर तथा ईश्वर को ही सत्य के रूप में स्वीकार किया। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य की आत्मा ईश्वर की ही निशानी है अतः समस्त मनुष्य समान हैं और उन्हें परस्पर सेवा, कल्याण, प्रेम एवं सद्भाव के साथ रहना चाहिए। द्वितीय गांधी जी सत्य एवं अहिंसा को साधन तथा साध्य के मध्य पवित्रता से जोड़ते हुए कहते हैं कि साधन एवं साध्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं कृ साध्य की पवित्रता के साथ-साथ साधन का पवित्र होना भी उतना ही आवश्यक है।

महात्मा गांधी के अनुसार सत्य साध्य है तथा अहिंसा उसकी प्राप्ति का साधन है। इसीलिए उन्होंने सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय आंदोलनों में अहिंसात्मक सत्याग्रह को माध्यम बनाया। एक ओर वे आंदोलन में गीता को साथ लेकर चलते थे तो दूसरी ओर खिलाफत आंदोलन, 1919 में मुस्लिम धर्मगुरुओं का सहयोग भी प्राप्त करते थे। महात्मा गांधी ने निम्न वर्ग के लोगों के मंदिर-प्रवेश का विरोध करने वालों के विरुद्ध वायकोम सत्याग्रह जैसे आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी निभाई तथा दलित समुदाय को हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग स्वीकार करते हुए हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। उन्होंने दलितों को 'हरिजन' अर्थात् 'हरि के सबसे प्रिय' की संज्ञा देकर सामाजिक-धार्मिक सहिष्णुता का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी जब सम्पूर्ण देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था तब 'वन मैन बाउंड्री फोर्स' कहे जाने वाले महात्मा गांधी बंगाल के नोआखली क्षेत्र में हिन्दू-मुस्लिम समुदायों के मध्य उपजे रक्तरंजित संघर्ष को शांत करने में सतत प्रयासरत थे।

गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता आज सम्पूर्ण विश्व के लिए इसलिए भी आवश्यक है ताकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे अमानवीय युद्धों को रोका जा सके। इसी सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2007 से गांधी जी के जन्मदिवस, 2 अक्टूबर को 'अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाना, समस्त भारतीयों के गौरवशाली इतिहास को समूचे विश्व के समक्ष प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष, वर्तमान प्रासंगिकता, दिशा एवं आगे की राह

आज भारत में हो रहे जातिगत संघर्ष, बढ़ता साम्प्रदायवाद, विलासितापूर्ण जीवन-शैली के कारण उत्पन्न आपसी भेदभाव तथा भ्रष्टाचार का बढ़ता स्तर, ये सभी वर्तमान समाज के लिए गंभीर चुनौतियाँ हैं। ऐसी परिस्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि सम्राट अशोक की धम्म नीति, सम्राट अकबर की सुलह-ए-कुल नीति तथा महात्मा गांधी की सर्वधर्म समभाव की नीति को पुनः अपनाया जाए ताकि समाज में जनकल्याण की भावना जाग्रत हो सके, आपसी प्रेम, दया, सहनशीलता एवं आध्यात्मिकता की ओर समाज अग्रसर हो सके तथा भारतीय दर्शन

का सार स्वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा साकार रूप ले सके। भारत पुनः विश्वगुरु बनकर सम्पूर्ण संसार को अहिंसा एवं सहिष्णुता के मार्ग का दर्शन करा सकेगा तथा तभी मनुष्य आत्मिक दृष्टि से सम्पूर्णता प्राप्त कर सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ

- 1^प सर्वपल्ली राधाकृष्णन कृ समकालीन भारतीय दर्शन।
- 2^प महात्मा गांधी कृ सत्य के साथ मेरा प्रयोग ;1925.1929
- 3^प महात्मा गांधी कृ हिंद स्वराज ;1909
- 4^प प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा कृ भारतीय दर्शन की रूपरेखा।
- 5^प छब्बत्त कृ प्राचीन भारत कृ रामशरण शर्मा।
- 6^प मध्यकालीन भारत कृ प्रो० सतीश चन्द्र।
- 7^प धर्म दर्शन की मूल समस्याएँ – वेद प्रकाश वर्मा।
- 8^प धर्म दर्शन – त्पज्ञण चंदकमल।
- 9^प धर्म-दर्शन सामान्य एवं तुलनात्मक – डॉ० रामेन्द्र।
- 10^प वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र)।
- 11^प हिन्दू-दर्शन कृ डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन।
- 12^प अशोक के 5^{वें} 12^{वें} एवं 14^{वें} शिलालेख।
- 13^प अशोक के धर्म लेख – जनार्दन मिश्र।